राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गों का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण

Architecture, Water Storage & Distribution in the Desert Forts of Rajasthan.

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

को पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत

इतिहास विभाग

शोध-प्रस्ताव की रूपरेखा

(Synopsis)

शोधार्थी

चोथूराम

शोध निर्देशक

प्रो. जी.एस. व्यास (सेवानिवृत्त)

इतिहास विभाग

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

Scanned with CamScanner

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Format for outline of Proposed Research Work (to be supplied in Six Copies)

1. Name of Scholar (In English) CHOTHU RAM
   (In Hindi) चोथू राम
2. Title of the Research Work
   (In English) Architecture, Water Storage & Distribution in the desert forts of Rajasthan.

   (In Hindi) राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण

3. Location
   a. Institution/Department where the work is to be done : इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

   b. Geographical area of Investigation, if any — जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, हनुमानगढ़

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective.	Annexure-I
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study)	Annexure-II
6. Research Gaps identified in the proposed field of Investigation. (Based on the review)	Annexure-III
7. Major Hypothesis, if any.	Annexure-IV
8. Research Methodology	Annexure-V
9. List of References cited.	Annexure-VI
10. Chapter wise details of proposed Research	Annexure-VII

Outline Approved

Signature of the Candidate with date

Name and Signature of supervisor
with Date & Seal

Scanned with CamScanner

APPENDIX-VI

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY AJMER

CERTIFICATE BY SUPERVISOR

Certified That -

1- I am willing to guide the research work of Shri/Ku./Smt. .... on the above subject. If he/she is registered for Ph.D.

2- To the best of my knowlegde The subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.

3- The Subject is of sufficient scope to keep the candidate Engaged for Two Years

4- The Subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved to outline of proposed research works submitted by the candidate.

5- I have __________________(give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is________________(give the serial number)

6- The candidate is not in a close relation (The terms of close relation is defined in the examination ordinance of the university)

Signature of the supervisor
with date

Certified that the available facilities will be extended to shri/Ku./Smt. .... for research work. if he/she is registered for Ph.D.

Signature of the Principal/Director
of the Institution with date

Signature of the Head of
Department with date

Scanned with CamScanner

4. प्रस्तावित शोध कार्य का महत्त्व एवं उद्धेश्य
(Introduction Importance of Proposed Investigation,Objectives)

भारत में प्राचीन काल से ही प्राकृतिक व मौसमी परिस्थियों के अनुसार विभिन्न प्रकार के दुर्गो का निर्माण किया जाता है शुक्र नीति में दुर्गो का 9 तरह से वर्गीकरण किया गया है (1) एरन दुर्ग (2) पारिख दुर्ग (3) पारिध दुर्ग (4) वन दुर्ग (5) धान्व दुर्ग (मरू दुर्ग) (6) जल दुर्ग (7) गिरि दुर्ग (8) सैन्य दुर्ग और (9) सहाय दुर्ग।

राजस्थान में महाराष्ट्र की भांति पग-पग पर दुर्ग देखने को मिलते हैं। यहॉ के राजाओं और सामन्तों ने अपने निवास की सुरक्षा के लिए, सामग्री संग्रह के लिए, आक्रमण से अपनी प्रजा को सुरक्षित रखने के लिए, पशुधन को बचाने के लिए तथा सम्पत्ति को सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग बनाये।

राजस्थान के दो तिहाई भाग पर मरूस्थल होने के कारण यहॉं धान्व (मरूदुर्ग) दुर्गो का निर्माण किया गया इन दुर्गो में स्थानीय प्राकृतिक स्थितियों के अनुरूप जनता के लिए पेयजल एवं सिंचाई की आवश्यकता के लिए सुव्यवस्थित जल भण्डारण और वितरण व्यवस्था की गई।

इस शोध कार्य द्वारा राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण को स्पष्ट किया जायेगा।

ऐतिहासिक दृष्टि से ''राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण'' प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित कार्य के मुख्य उद्धेश्य अग्रलिखित हैः-

Scanned with CamScanner

1. राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में मरुस्थलीय दुर्गों में स्थापत्य, जल भण्डारण और वितरण के महत्व को उजागर करना।

2. राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य, जल भण्डारण और वितरण व्यवस्था का अध्ययन करना।

3. राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गो में जल भण्डारण और वितरण व्यवस्था का सामरिक उपयोगिता की दृष्टि से अध्ययन करना।

4. मरुस्थलीय दुर्गो में जल भण्डारण के संसाधनों एवं वितरण व्यवस्था का अध्ययन करना

5. मरुस्थलीय दुर्गो में जल भण्डारण और वितरण व्यवस्था का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विस्तृत एवं गहन अध्ययन करना।

शोधार्थी द्वारा राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण को स्पष्ट करना ही शोध कार्य का मुख्य उद्धेश्य है।

Scanned with CamScanner

5. प्रस्तावित शोध कार्य के साहित्य का सर्वेक्षण
(Review work Already Done the Subject of Proposed Research Study)

प्रस्तुत विषय पूर्णतया नवीनतम और मौलिक विषय है जिस पर अभी तक कोई शोध नही हुआ है। तथापि प्रकारान्तर से शोध कार्य हुए है जिनमें मुख्य निम्न हैं-

डॉ. रतनलाल मिश्र " दि फोर्टस ऑफ राजस्थान" कुटीर प्रकाशन मांडवा झुंझुनूं 1985 ई.।

डॉ. राघवेन्द्र सिंह मनोहर "राजस्थान के प्रमुख दुर्ग" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर 1997 ई. दीनानाथ दुबे " भारत के दुर्ग" सुचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार1999ई. (द्वितीय संस्करण) आर.एस खंगारोत व पी.एस. नाथावत-जयगढ़ दी इंविनसीवल फोर्ट ऑफ आम्बेर। आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स जयपुर 1990ई.। टी.एन.गुप्ता एवं आर.एस. खंगारोत "आम्बेर जयपुर ए-ड्रीम इन दी डेजर्ट" क्लासिक पब्लिशिंग हाउस जयपुर 1999ई.।

ए.पी.सिंह फोर्टस एण्ड फोर्टीफिकेशन्स इन इंडिया अगम काला प्रकाशन दिल्ली 1987ई.। रचना मेहता जयपुर के दुर्ग व महलो की वास्तु कला, चित्रकला राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर 2004ई.। डॉ. रतनलाल मिश्र "राजस्थान के दुर्ग" साहित्यकार 2008ई.।

राजेश चढढा नीमराना फोर्ट पैलेस 2004ई. कन्सट्रक्टिंग राजपूताना राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर। सीड मैग्जीन वाटर एण्ड सैन्ड इन राजस्थान 2009ई.। एम.एस.राठौड़ अरबन वॉटर सप्लाई इन राजस्थान प्रोब्लम्स प्रोस्पेक्ट्स। डॉ.राजेश्वर व्यास "मेवाड़ की कला और स्थापत्य"राजस्थान प्रकाशन जयपुर 1988ई.।

Scanned with CamScanner

डॉ. दृिजेन्द्रनाथ शुक्ल " भारतीय वास्तु कला शास्त्र" शुक्ल प्रिंटिंग प्रेस लखनऊ। प्रदीप त्रिखा "कल्चरल हेरिटेज ऑफ राजस्थान" दयानन्द कॉलेज अजमेर। एस. के प्रमाणिक हाइड्रोलोजी ऑफ द राजस्थान डेजर्ट। रतनलाल मिश्र " स्मारको का इतिहास" इना श्री पब्लिशर्स जयपुर 1999ई.। लतिका सिंह ग्लिम्पसेज ऑफ राजस्थान-राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर। स्पेनिश काउन्सिल फोर साइन्टिफिक रिसर्च थार आर्कियोलोजी ऑफ वाटर 1999ई.।

उपर्युक्त पूर्व में किए गए कार्यो से प्रस्तुत शोध कार्य को एक दृष्टि प्राप्त होगी।

राजस्थान के मरुस्थलीय प्रदेश में जल का विशेष महत्त्व है।

अतः मरुस्थलीय प्रदेश के इन दुर्गो विशेषकर जैसलमेर, जोधपुर, नागौर, हनुमानगढ़ के दुर्गो में जहाँ शासको के अलावा स्थानीय प्रजा के कुछ वर्ग निवास करते थे, उनमें किस प्रकार जल भण्डारण एवं वितरण होता था। उनकी उस काल में क्या तकनीक थी इसका अध्ययन कर उसकी प्रस्तुति का प्रयास करूगाँ।

Scanned with CamScanner

6. प्रस्तावित शोध क्षेत्र में शोध संबंधी रिक्तता

(Research Gaps Identified in the Proposed Fied of Investigation Based on the RevieW)

" राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण"

इस शीर्षक पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरी दृष्टि में यह शोध राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण को स्पष्ट करने का नवीन आयाम उजागर करता है व शोध की मांग करता है

Scanned with CamScanner

7. मुख्य परिकल्पना
(Major Hypothesis, if any)

इस शोध कार्य का मुख्य उद्धेश्य राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण का ऐतिहासिक अध्ययन करना।

राजस्थान के इतिहास में दुर्ग स्थापत्य की रुपरेखा को स्पष्ट करना तथा राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में जल भण्डारण और वितरण व्यवस्था का ऐतिहासिक अध्ययन करना।

राजस्थान के मरूस्थलीय दुर्गो का स्थापत्य की रुपरेखा का अध्ययन करना तथा उनमें जल भण्डारण और वितरण पर प्रकाश डालना एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

Scanned with CamScanner

8. शोध पद्धति
(Research Mathodology)

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा जिसमें राजस्थान के मरुस्थलीय दुर्गों का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन कर उनकी वस्तुस्थिति का परिचय, स्थापत्य एवं उनमें जल भण्डारण और वितरण की उपयोगिता का व्यक्तिशः अध्ययन कर जल भण्डारण और वितरण का अध्ययन किया जायेगा।

अध्ययन के प्राथमिक स्त्रोतों हेतु दुर्गों का भ्रमण कर प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन कर उनमें उत्कीर्ण शिलालेखों से और स्थानीय व्यक्तियों से मौखिक रूप से जानकारी प्राप्त की जायेगी।

इसी प्रकार अध्ययन के द्वितीयक स्त्रोतों हेतु विभिन्न प्रकार के साहित्यिक ग्रंथों, वर्तमान लेखकों की पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, अखबारों, सरकारी पब्लिकेशन्स आदि को आधार बनाया जायेगा।

Scanned with CamScanner

9. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(List of References Cited)

अभिलेखागारीय सामग्री :–

1. पुरातत्त्व एवं संग्रहालय विभाग-जयपुर

2. राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर एवं विभिन्न शाखाएं

   (1) उदयपुर अभिलेखागार एवं संबंधित अभिलेख

   (2) बीकानेर अभिलेखागार एवं संबंधित अभिलेख

   (3) जयपुर अभिलेखागार एवं संबंधित अभिलेख।

3. जिला सूचना केन्द्र – जैसलमेर।

4. जिला सूचना केन्द्र – जोधपुर।

5. जिला सूचना केन्द्र – नागौर।

6. जिला सूचना केन्द्र – हनुमानगढ़।

7. राजस्थान प्राच्य शोध संस्थान – जोधपुर।

8. भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार,फोरेन एण्ड पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट नई-दिल्ली।

9. भारत का राष्ट्रीय अभिलेखागार राजपूताना ऐजेन्सी रिकार्ड-नई दिल्ली।

10. नेहरू मेमोरियल म्युजीअम् एवं पुस्त्कालय, नई दिल्ली।

Scanned with CamScanner

1. आधुनिक हिन्दी ग्रंथ :–

1. ओझा डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द, सिरोही राज्य का इतिहास, राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर 1997
2. ओझा डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द, ओझा निबंध संग्रह, भाग 1 से 4 उदयपुर, 1954
3. ओझा डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द, राजपूतानो का इतिहास, भाग–1
4. गहलोत जगदीश सिंह, मारवाड़ राज्य का इतिहास, महाराज मानसिंह पुस्तक प्रकाश, मेहरानगढ़, जोधपुर–1991 पुनर्मुद्रण।
5. गहलोत जगदीश सिंह, राजपूताने का इतिहास, भाग- प्रथम, हिन्दी साहित्य मन्दिर, घन्टाघर, जोधपुर विक्रम संवत–1994
6. घोष अमलानन्द, जैन कलां एवं स्थापत्य भाग–1 से 3 भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली 1975
7. जैन, हुकमचन्द, भारतीय ऐतिहासिक स्थल कोष, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर 2003–04
8. दुबे पण्डित दीनानाथ, भारत के दुर्ग, किताब महल प्रकाशन, दिल्ली 1994
9. नीरज जयसिंह एवं शर्मा बी.एल., राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर–1989
10. पुरोहित, प्रकाश, आज भी प्रासंगिक है परम्परागत जल स्त्रोत, राजस्थान ग्रंथागार, जोधपुर–2008
11. भार्गव डॉ. वी.एस.–मध्यकालीन भारतीय इतिहास, रिसर्च पब्लिकेशन, जयपुर–1989
12. भाटी डॉ. हुकूम सिंह, राजस्थान के मेड़तिया राठोड़ (आईसीएनआर) राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर–1986
13. भाटी हरिसिंह, भटनेर का इतिहास, कवि प्रकाशन बीकानेर–2000
14. भाटी डॉ. नारायण सिंह, राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण भाग–4
15. मयंक डॉ. मांगीलाल, जैसलमेर राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर–1984
16. मयंक डॉ. मांगीलाल, जोधपुर राज्य का इतिहास, पंचशील प्रकाशन–जयपुर 1975
17. मनोहर डॉ. राघवेन्द्र सिंह, जयपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक स्मारक एवं शिलालेख।

Scanned with CamScanner

18. मनोहर डॉ. राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के राजघरानों का सांस्कृतिक अध्ययन।
19. मनोहर डॉ. राघवेन्द्र सिंह, राजस्थान के प्रमुख दुर्ग, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर-1997
20. माथुर प्रो. तेजकुमार एवं शर्मा डॉ. निदेश चन्द, मध्यकालीन राजस्थान, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक इतिहास 1400 ई. से 1708 ई. आचमन पब्लिकेशन्स, अजमेर-2005
21. मिश्र डॉ. रतनलाल, राजस्थान के दुर्ग, कुशन कुटीर प्रकाशन, झुन्झुनूँ-1985
22. मिश्र, अनुपम, तालाब आज भी खरे है, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, दिल्ली।
23. मेहता पृथ्वीसिंह, हमारा राजस्थान, इलाहाबाद-1950
24. राणावत ईश्वर सिंह, राजस्थान के जल संसाधन, चिराग प्रकाशन उदयपुर-2004
25. व्यास श्यामाप्रसाद, राजस्थान के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, जोधपुर-1986
26. व्यास राम प्रसाद, महाराणा राजसिंह, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर-1983
27. व्यास हरिदत्त गोविन्द, जैसलमेर राज्य का इतिहास, हिमालय प्रेस, बनारस-1920
28. सहल डॉ. कन्हैयालाल, राजस्थान के सांस्कृतिक उपाख्यान
29. शर्मा डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा-1993
30. शर्मा डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत, जयपुर-1973
31. शर्मा डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर-1989
32. शर्मा हरिशंकर, मध्यकालीन भारत,मलिक एण्ड कम्पनी, जयपुर-2004
33. शर्मा डॉ. कालूराम एवं व्यास डॉ. प्रकाश, भारत का इतिहास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर-1999
34. शर्मा नन्दकिशोर, युग यगीन वल्भ प्रदेश, जैसलमेर राज्य का राजनैतिक इतिहास, सीमान्त प्रकाश, जैसलमेर-1993

Scanned with CamScanner

35. शर्मा नन्दकिशोर, जैसलमेर का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास सीमान्त प्रकाशन, जैसलमेर–1993

36. शिवरती डॉ. अजातशत्रु, राजपूतों का सामाजिक जीवन, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर–2006

2. राजस्थानी ग्रंथ :–

1. नैणसी मुंहता, मुहता नैणसी री ख्यात, सं. बदरीप्रसाद साकरिया भाग प्रथम 1984, राज. प्रा.विद्या. प्रति जोधपुर।
2. नैणसी री मुंहता, मारवाड़ रा परगना री विगत सं. डॉ. नारायण सिंह भाटी, भाग प्रथम, राज. प्रा.वि. प्रति जोधपुर–1968
3. भट्ट लक्ष्मीधर, चक्रपाणि विजय महाकाव्य सं. प्रो. के.के. शास्त्री राज. प्रा.विद्या. प्रतिष्ठान जोधपुर–1956
4. भाटी डॉ. नारायण सिंह, अजीतविलारा परम्परा, राजस्थानी सं. शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
5. भाटी डॉ. नारायण सिंह, जैसलमेर री ख्यात, राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर –1981।
6. भाटी डॉ. नारायण सिंह, परम्परा पिंगल शिरोमणि, राजसथानी शोध संस्थान, चौपासनी, जोधपुर।
7. मेहता अजीत सिंह, भाटीनामा, जैसलमेर, वि.स. 1984
8. लक्ष्मीचन्द, टवारीख जैसलमेर, राजपूताना गजट मंत्रालय, अजमेर वि.स. 1984
9. वीरभाण, राजरूपक, सं. रामकर्ण आसोवा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी–1941
10. शास्त्री डॉ. एच.पी. सम्पादक, शब्दरतन प्रदीप, राजस्थान प्रा.वि.प्रति 1956
11. सिढायच दयालदास, ख्यात देश दर्पण, बीकानेर राज्य का इतिहास, सं. जे.के. जैन डॉ. गिरिजा शंकर शर्मा सनत्कुमार स्वामी, डॉ. सत्यनारायण स्वामी, राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर–1989
12. सूरी जयसिंह, हमीरमदमर्दन, बम्बई संस्करण–1926
13. शेखावत सौभाग्य सिंह (संपा) डूंगरसी रतनू ग्रंथावली जोधपुर–1979

3. संस्कृत ग्रन्थ :–

1. अष्टाध्यायी
2. अमरकोश

Scanned with CamScanner

3. कुमार संभव
4. नरपदि जयचर्या
5. मानसोल्लास
6. राजतरंगिणी
7. रघुवंश
8. राजवल्लभ
9. समरांगण सूत्रधार

4. शोध पत्रिकाएँ :-

1. अनेकान्त, दिल्ली
2. अन्वेषणा, त्रैमासिक, उदयपुर
3. भारत कार्मुदी, इलाहाबाद
4. भारतीय इतिहास कोष, हिन्दी समिति, लखनऊ
5. ऐपिग्राफिका इण्डिया
6. ज्ञानोदय, बनारस
7. इम्पीरियल गजेटियर ऑफ इण्डिया (राजपूताना) 1908 संस्करण
8. इण्डियन एन्टीक्वेरी
9. इतिहास समीक्षा, जयपुर
10. जैन एन्टीक्वेरी
11. जनमन
12. जिज्ञासा, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयुपर।
13. जिनवानी, जयपुर
14. कल्याण, गीताप्रेस, गोरखपुर
15. मज्झमिका, उदयपुर
16. मझभारती, पिलानी, राजस्थान
17. नागरी प्रचारिणी पत्रिका,वाराणसी
18. परम्परा, त्रैमासिक चौपासनी, जोधपुर
19. प्रबोध भारती, कलकत्ता
20. पुरकल्प, वाराणसी
21. पुरातत्त्व, नई दिल्ली
22. राजस्थान भारती, बीकानेर
23. राजस्थानी, बीकानेर
24. राजपूताना गजेटियर (वोल्यूम-।।)
25. रासो (त्रैमासिक) महर्षि दयानन्द सरस्वती वि.वि. अजमेर
26. रिसर्चर, पुरातत्त्व विभाग, राजस्थान
27. शोध पत्रिका, उदयपुर
28. वरदा बिसाउ, राजस्थान
29. वीरवाणी, जयपुर

Scanned with CamScanner

10. प्रस्तावित शोध के अध्याय
(Chapter Wise Details of Proposed Research)

अध्याय–1 राजस्थान में दुर्ग निर्माण की रूपरेखा

अध्याय–2 दुर्गों में जल भण्डारण एवं वितरण की आवश्यकता एवं महत्त्व

अध्याय–3 राजस्थान के दुर्गों में जल भण्डारण एवं वितरण की विधियाँ

अध्याय–4 जोधपुर दुर्ग का स्थापत्य एवं जल भण्डारण और वितरण

अध्याय–5 सोनारगढ़ दुर्ग का स्थापत्य एवं जल भण्डारण और वितरण

अध्याय–6 नागौर दुर्ग का स्थापत्य एवं जल भण्डारण और वितरण

अध्याय–7 भटनेर दुर्ग का स्थापत्य एवं जल भण्डारण और वितरण

अध्याय–8 उपसंहार

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य की संभावित अवधि

प्रस्तावित शोध कार्य 2 वर्ष में करना अपेक्षित है, जिसके अन्तर्गत–

1. प्रस्तावित शोध कार्य हेतु लगभग प्रथम वर्ष से संबंधित शोध संदर्भ ग्रन्थों का सूचीकरण, सर्वेक्षण एवं एतद् संबंधित शोध पत्रों का अवलोकरण किया जाना प्रस्तावित है।

2. द्वितीय वर्ष के अधीन एतद् विषयक शोध सामग्री का अध्ययन तथा विषय से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं की बहुआयामी अध्ययन में बिन्दुवार लेखन किया जाना प्रस्तावित है।

3. द्वितीय वर्ष में लेखन कार्य पूर्ण कर समापन का कार्य किया जा सकेगा। उपर्युक्त शोध कार्य की प्रस्तावित अवधि है।

Signature of the Candidate
with date

Outline Approved

Name and Signature of supervisor
with Date & Seal

Scanned with CamScanner